

Need for more trains from Chennai to Thanjavur Junction in Tamil Nadu

SHRI R. VAITHILINGAM (Tamil Nadu): Sir, Thanjavur is an ancient town located in the heart of Cauvery delta in Tamil Nadu. The town is famous for the Brihadeeswara temple which is a World Heritage Site and the Navagraha temple that are thronged by pilgrims from all parts of the country. It is also famous for its traditional handicrafts such as Thanjavur art plates and paintings.

MR. CHAIRMAN: Shri Vaithilingam ji, you have to speak and not read. Just see the text and speak.

SHRI R. VITHILINGAM: Thanjavur has a railway junction located on the main line of the railway system in the Coromandel Coast connecting Chennai with Tiruchirappalli via Viluppuram, Cuddalore and Kumbakonam. Although the main line and Thanjavur Railway Station came into existence in the year 1881, trains operating through Thanjavur junction are still a few. This poses great inconvenience to the commuters of the region and the domestic and foreign tourists. Pilgrims and tourists coming to Thanjavur from other States and also foreign tourists have to take trains from Chennai. But, unfortunately, there is just one exclusive train, the Uzhavan Express between Chennai and Thanjavur. Other trains operating from Chennai to places like Rameswaram, Tirunelveli, Madurai and Trichy make only a brief stopover at Thanjavur. As few berths and seats are assigned to passengers alighting at Thanjavur, most commuters of Thanjavur region and also the tourists and pilgrims face great hardship in reaching Thanjavur. I appeal to the Government to introduce exclusive superfast trains between Chennai and Thanjavur in greater frequencies to cater to the increasing number of commuters on the route. In the same way, exclusive trains may be introduced from Thanjavur to destinations like Trichy, Madurai, Pattukottai and Thiruvavur enabling the local commuters and alighting tourists to visit those important towns.

SHRI S. MUTHUKARUPPAN (Tamil Nadu): Sir, I associate myself with the matter raised by the hon. Member.

SHRIMATI VIJILA SATHYANANTH (Tamil Nadu): Sir, I also associate myself with the matter raised by the hon. Member.

Bringing Maharaja Duleep Singh's ashes to Amritsar

श्री प्रताप सिंह बाजवा (पंजाब): सर, आज जो इश्यू मैं आपके सामने लेकर आया हूँ,

[श्री प्रताप सिंह बाजवा]

यह वह इश्यू है, जिस पर सारा पंजाबी जगत, जो दुनिया में चाहे कहीं भी बैठा हो, वह चाहता है कि history को correct किया जाए।

सर, महाराजा दलीप सिंह, जो शेर पंजाब, महाराजा रणजीत सिंह जी के सबसे छोटे बेटे थे, उनका जन्म सन् 1838 में हुआ था। एक साल के बाद महाराजा रणजीत सिंह जी का देहांत हो गया और पाँच साल की उम्र में he was declared as the Maharaja of Punjab. उसके पाँच-सात साल बाद, सन् 1849 में ब्रिटिशर्स ने पंजाब पर कब्जा कर लिया और इनको तथा इनकी माता, रानी ज़िन्दों को उठाकर अंग्रेज़ यूपी में ले गए। फिर, जब उनकी उम्र 16 साल से भी कम थी, तब उनको अंग्रेज़ों ने from a Sikh to a Christian में convert कर दिया। This is also under question mark. Did he know about it? After one or two years, he was taken to England, जहाँ वे क्वीन विक्टोरिया की patronage में रहे। उसके बाद, हम सभी यह जानते हैं कि उनके पास कैसे हमारा कोहिनूर गया, कैसे हमारा सारा राज गया।

मैं यह बताना चाहता हूँ कि जब रानी ज़िन्दों को ब्रिटिशर्स ने उनको अपने बेटे के पास जाने के लिए allow किया, तब रानी ज़िन्दों ने सिख कल्चर के बारे में, अपने राज के बारे में अपने बेटे को जानकारी दी। उसके बाद उन्होंने अंग्रेज़ों से कहा कि आपने इधर मुझे जो estate दी है, इसको मैं छोड़ना चाहता हूँ और मैं re-convert होना चाहता हूँ। फिर वे सन् 1886 में as a Sikh re-convert भी हुए। उसके बाद, जब वे अंग्रेज़ों को छोड़कर अपनी फैमिली के साथ वापस हिन्दुस्तान आना चाहते थे, तो बगावत से डरते हुए अंग्रेज़ों ने उनको रास्ते में ही गिरफ्तार कर लिया।

सर, आज का सारा पाकिस्तान, आधा पंजाब और अफगानिस्तान में महाराजा रणजीत सिंह जी का राज था और उन्होंने 50 साल तक foreign invaders को allow नहीं किया। कैम्ब्रिज के पास Elveden Estate है, जहाँ उनको दफनाया गया था। हम चाहेंगे कि वहाँ से उनकी अस्थियाँ लाई जाएँ। मैं इस संबंध में प्राइम मिनिस्टर साहब से मिल भी चुका हूँ और उनसे अपील भी कर चुका हूँ कि अमृतसर, जो कि सिखों का religious capital है, वहाँ उनकी अस्थियों को लाकर बाकायदा Sikh rites के साथ उनकी यादगार बनाई जाए। इसी तरह से, शहीद ऊधम सिंह जी की अस्थियाँ भी सन् 1974 में लाई गई थी। गवर्नमेंट ऑफ इंडिया से यह मेरी डिमांड है कि महाराजा दलीप सिंह जी को वापस अपने देश में लाया जाए और यहाँ लाकर Sikh rites के साथ रखा जाए तथा जो ब्रिटिश हिस्ट्री है, अगर उसको re-write करने की कोशिश की जाए, तो उसको विफल किया जाए।

SHRI DIGVIJAYA SINGH (Madhya Pradesh): Sir, I associate myself with the matter raised by the hon. Member.

KUMARI SELJA (Haryana): Sir, I also associate myself with the matter raised by the hon. Member.

SHRI T.K. RANGARAJAN (Tamil Nadu): Sir, I also associate myself with the matter raised by the hon. Member. .

SHRI TIRUCHI SIVA (Tamil Nadu): Sir, I also associate myself with the matter raised by the hon. Member.

SHRI SUKHENDU SEKHAR RAY (West Bengal): Sir, I also associate myself with the matter raised by the hon. Member.

SHRI PRASANNA ACHARYA (Odisha): Sir, I also associate myself with the matter raised by the hon. Member.

SHRI K.J. ALPHONS (Rajasthan): Sir, I also associate myself with the matter raised by the hon. Member.

SHRI RIPUN BORA (Assam): Sir, I also associate myself with the matter raised by the hon. Member.

DR. AMEE YAJNIK (Gujarat): Sir, I also associate myself with the matter raised by the hon. Member.

SHRIMATI WANSUK SYIEM (Meghalaya): Sir, I also associate myself with the matter raised by the hon. Member.

SHRI KUMAR KETKAR (Maharashtra): Sir, I also associate myself with the matter raised by the hon. Member.

SHRI VIVEK K. TANKHA (Madhya Pradesh): Sir, I also associate myself with the matter raised by the hon. Member.

DR. L. HANUMANTHAIAH (Karnataka): Sir, I also associate myself with the matter raised by the hon. Member.

SHRIMATI SHANTA CHHETRI (West Bengal): Sir, I also associate myself with the matter raised by the hon. Member.

SHRI MANISH GUPTA (West Bengal): Sir, I also associate myself with the matter raised by the hon. Member.

श्रीमती अम्बिका सोनी (पंजाब): महोदय, मैं भी स्वयं को इस विषय से संबद्ध करती हूँ।

श्री अखिलेश प्रसाद सिंह (बिहार): महोदय, मैं भी स्वयं को इस विषय से संबद्ध करता हूँ।

श्रीमती विप्लव ठाकुर (हिमाचल प्रदेश): महोदय, मैं भी स्वयं को इस विषय से संबद्ध करती हूँ।

श्री राजमणि पटेल (मध्य प्रदेश): महोदय, मैं भी स्वयं को इस विषय से संबद्ध करता हूँ।

प्रो. मनोज कुमार झा (बिहार): महोदय, मैं भी स्वयं को इस विषय से संबद्ध करता हूँ।

श्री संजय सिंह (राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली): महोदय, मैं भी स्वयं को इस विषय से संबद्ध करता हूँ।

श्री सुशील कुमार गुप्ता (राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली): महोदय, मैं भी स्वयं को इस विषय से संबद्ध करता हूँ।

श्री मधुसूदन मिस्त्री (गुजरात): महोदय, मैं भी स्वयं को इस विषय से संबद्ध करता हूँ।

श्री शिव प्रताप शुक्ल (उत्तर प्रदेश): महोदय, मैं भी स्वयं को इस विषय से संबद्ध करता हूँ।

श्री संभाजी छत्रपती (नाम निर्देशित): महोदय, मैं भी स्वयं को इस विषय से संबद्ध करता हूँ।

श्री सभापति: ब्रिटिश लोगों ने क्या किया, क्या नहीं किया ...**(व्यवधान)**... Two days back, I had been to Kunja Bahadurpur in Uttarakhand where Raja Vijay Singh, his senapati, Kalyan Singh were hanged, cut into pieces, and then hanged in front of the Dehradun Jail. Not only that, except the pregnant women of the village, all the men were hanged under one tree. Horrible!

Ad hoc teachers of the University of Delhi

प्रो. मनोज कुमार झा (बिहार): ऑनरेबल चेयरमैन सर, आपका शुक्रिया। यह बहुत ही महत्वपूर्ण विषय है और यह इसलिए भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि आप दिल्ली विश्वविद्यालय के चांसलर हैं। सर *ad hoc* appointments पर तलवार लटक रही है। 28 अगस्त को एक चिट्ठी इश्यू की गई और उस चिट्ठी के इश्यू होने के बाद कहा गया है कि undertaking दो, लेकिन undertaking में कोई गारंटी नहीं है, उनको contractual appointment में तब्दील किया जा रहा है जिससे कम से कम 5,000 शिक्षक सीधे तौर पर प्रभावित हो रहे हैं।